- फसल की कटाई (जड़ें निकालना) का कार्य जनवरी के मध्य में किया जाता है।
- फसल की कटाई (जड़ें निकालते समय) गांठों को ठीक से निकाला जाना चाहिए क्योंकि यदि वे क्षतिग्रस्त हो जाएं तो फसल को नुकसान पहुंचता है।

फसल कटाई के बाद का प्रबंधनः

- गांठे निकालने के बाद उन्हें छीलकर (छिलका उतार कर) छाया में खुली हवा में सुखाया जाना चाहिए।
- इन सूखी जड़ों (गांठों) को उपयुक्त नमीरहित कन्टेनरों में रखा जाना चाहिए।

पैदावारः

- एक एकड़ में ताजी जड़ों (गांठों) की पैदावार लगभग 48 टन हो जाती है जबकि सूखी जड़ें (गांठें) लगभग 10 टन तक होती हैं। इस खेती की लागत 95 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर तक बैठती है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार
तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वेबसाइट : www.nmpb.nic.in

नोट – कृषि प्राद्योगिकी का विकास 'एन बी पी जी आर' क्षेत्रीय स्टेशन, यूमियम, शिलांग, 793103 मेघालय और वन विभाग, बिलासपुर, अचनाकमर, छत्तीसगढ़ द्वारा किया गया है।

काली हल्दी की खेती

सामान्य नाम : काली हल्दी
वानस्पतिक नाम : कुरकुमा कैसिया
कुल : ज़िंजीबरेसी
उपयोगी भाग : प्रकन्द
सामान्य उपयोग : इस पादप में एंटी–बैक्टिरियल और एंटी–फंगल गुण पाए जाते हैं। यह मस्तिश्क व हृदय के लिए एक टॉनिक का काम करता है। इसकी गांठें ल्यूकोडरमा, बवासीर, ब्रांकाइटिस (श्वास रोग), अस्थमा, ट्यूमर, एलर्जी आदि के ईलाज के लिए उपयोगी होती हैं।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

काली हल्दी

कुरकुमा कैसिया
कुल–ज़िंजीबरेसी

यह एक लम्बा जड़दार सदाबहार पौधा है जिसका 1.0–1.5 सेंटीमीटर ऊचाई होती है। इसकी जड़ (गांठ या प्रकन्द) रंग में नीली–काली होती है।

जलवायु व मिट्टी :

- यह रेतीली – चिकनी और अम्लीय किस्म की मिट्टी में अच्छी उगती है।
- हालांकि, यह आंशिक छाया–प्रिय प्रजाति का पौधा है, लेकिन, यह खुली धूप और खेती की परिस्थितियों के अनुसार अच्छा उगता है।

प्रजनक सामग्री

- इसकी गांठें ही इसकी प्रजनक सामग्री हैं।
- दिसम्बर माह में या खेती से ठीक पहले पकी हुई गाठों को एकत्र किया जाता है और लम्बाई में इस तरह काटा जाता है कि प्रत्येक भाग में एक अंकुरण कली हो।

नर्सरी तकनीक

- **पौध तैयार करना** – गांठ को सीधे ही खेत में बो दिया जाता है।
- **पौध दर व पूर्व–उपचार** – खेती के लिए एक हेक्टेयर में लगभग 2.2 टन गांठें आवश्यक होती हैं और इन्हें 30X30 सेमी. के अन्तर पर बोया जाता है।

भूमि तैयार करना और उर्वरक का प्रयोग :

- भूमि को जोता जाता है, उसके ढेले तोड़े जाते हैं और उसे समतल किया जाता है। फिर, इस पर उर्वरक जिसकी मात्रा 5 टन प्रति हेक्टेयर और नाइट्रोजन, फॉसफोरस व पोटाशियम प्रति हेक्टेयर 33.80 किलोग्राम मिलाकर खेत में छिड़काव किया जाता है।

प्रत्यारोपण और पौधों में अन्तर :

- मानसून से पूर्व की अवधि के दौरान जड़ (गांठ) को जमीन में दबा कर उगाया जाता है।
- 30X30 से.मी. के अन्तर में पौधे लगाना उपयुक्त है। प्रति हेक्टेयर 1100 पौध (गांठों के टुकड़े) आवश्यक होती हैं।
- गांठे लगभग 15–20 दिनों के अन्दर अंकुरित हो जाती हैं।

अंतर फसल प्रणाली (इन्टर–क्रापिंग सिस्टम) :

- काली हल्दी अकेले ही उगाई जाती है।
- लेकिन, इसे छतरीनुमा पेड़ों के साथ अधिक फासले के बीच भी उगाया जा सकता है।

संवर्धन विधियां

- पादप–रोपण के 45 दिनों और 60 दिनों के बाद पौधों के आसपास कुछ मिट्टी चढ़ाई जाती है।
- पौधे लगाने के बाद उनकी शुरुआती वृद्धि के दौरान बढ़ती खरपतवार को कम करने के लिए उसे बीच–बीच में हाथ से हटाया जाना आवश्यक है। इसे 60, 90 और 120 दिन के बाद हटाने की सलाह दी जाती है।

सिंचाई

- यह फसल आमतौर पर खरीफ सीजन में वर्षायुक्त हालात में उगाई जाती है
- वर्षा न हो तो पानी का छिड़काव किया जाना चाहिए।

बीमारी व कीटनाशक

- कभी–कभी फसल के पत्तों पर निशान (टेफरिना स्प.) और घन्चे (कार्टिसिअम स्प.) दिखाई देते हैं। इस बीमारी की रोकथाम के लिए पत्तों पर 1 बॉरडाक्स मिश्रण का छिड़काव मासिक अन्तरालों पर किया जाना चाहिए।

फसल–कटाई प्रबंधन

फसल पकना और उसकी कटाई :

- फसल पकने में लगभग 9 माह का समय लगता है।